ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः

नित्य तर्पण विधि

(प्रतिदिन पितरों का तपर्ण करने की सरल पद्धति)
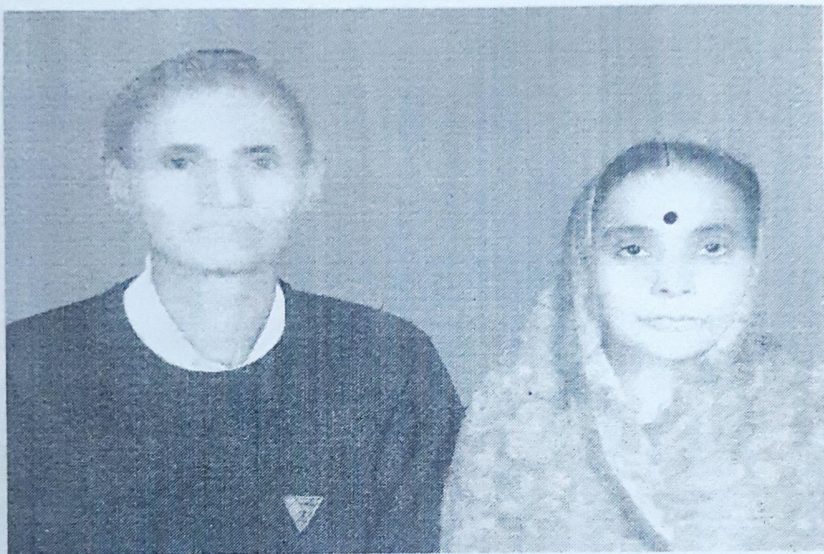
पूज्यनीय पिताजी स्व० नारायण दत्त जोशी एवं
माताजी स्व० जया जोशी जी की स्मृति में सप्रेम निवेदन

निवास –
"जया–नारायण धाम"
आवास विकास कालोनी
पो०ओ० भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी, जनपद नैनीताल

–संकलन एवं सम्पादन–
राजीव कुमार शर्मा, अध्यापक
विवेकानन्द पूर्व मा० विद्यालय
हल्द्वानी, जनपद नैनीताल
मो० नं. 9412970157

क्षमा याचना

धार्मिक अनुष्ठानों से मेरा अधिक व्यवहार नहीं रहा है। माताजी सभी धार्मिक क्रिया–कलापों को अपने व्यवहारिक ज्ञान से सम्पन्न करा लिया करती थीं। पिताजी के गोलोकवास के पश्चात् उन्होंने मुझे वार्षिक श्राद्ध तक प्रतिदिन तर्पण करने का आदेश दिया। इसे मेरा दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि ढाई माह में माता जी भी गोलोकवासी हो गयीं। एक तर्पण की पुस्तक मामा श्री चन्द्रशेखर पाण्डे जी मेरे लिए ले आये, जिसको पढ़कर तपर्ण करने लगा। लेकिन मुझे जो संस्कृत का अल्पज्ञान था, उससे लगा कि सामान्य व्यक्ति को इसे पढ़ना कठिन है, साथ ही इसमें छपाई की अनेक त्रुटियां हैं।

प्रथम मासिक श्राद्ध पंडित अनिल पंत जी द्वारा करवाया गया। जैसाकि मेरे मन में शंका थी, बहुत से शब्द अलग थे। फिर उन्होंने मुझे अपनी पुस्तक दी, उससे तर्पण करने पर कुछ नयी त्रुटियां दृष्टिगोचर हुईं। हृदय में शंकाओं के जन्म के साथ विचार आया कि क्या कोई ऐसी पुस्तक है, जिसमें हिन्दी में भी समझाया गया हो। तब मामाजी ने ही कहा कि क्यों न मैं ही नयी तर्पण की पुस्तक अपने कम्प्यूटर से छाप लूँ।

उनके उत्साहवर्धन के बाद आचार्य विनय जोशी जी व अन्य विद्वत्वजनों से परामर्श तथा तर्पण विधि की अन्यान्य पुस्तकों के अध्ययन के पश्चात **'सार–सार को गहि ले'** की विधि से इस पुस्तक को आकार देने का प्रयास किया। मानता हूँ इस विधा का ज्ञान न होने से अनेक त्रुटियां हुई होंगी, पर आप विज्ञजनों से उन्हें सुधारने का आग्रह करते हुए आपके हाथ में इसे देने का प्रयास कर रहा हूँ। आशा करता हूँ जनसामान्य के लिए मेरा यह प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा

21सितम्बर, 2021

–राजीव कुमार शर्मा

नित्य तर्पण विधि

सामग्री – कुश, जौं, तिल, अक्षत, चन्दन, सफेद फूल, दीप, धूप, पाती (आंवला, अनार, हजारीफूल या प्यौं की पत्तियां) गंगाजल व गणेश शिला।

स्नान करके पूर्व की ओर मुख कर बैठें। शिखा बांध दीप जला जनेऊ शव्य (बाये कन्धे से दाहिनी ओर) कर आचमन करें–

ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा, ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा, ॐ सामवेदाय स्वाहा, ॐ अथर्ववेदाय नमः।

हाथ में फूल लेकर गणेश का ध्यान –

यं ब्रह्म वेदान्त विदो वदन्ति परं प्रधानं पुरूषं तथान्ये। विश्वोद्‌तः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विध्नविनाशाय। अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूज्यते त्रिदशैरपि सर्व विध्नछिदे तस्मै गणाधिपतये नमः। **फूल चढ़ा दें।**

संकल्प – हाथ में जौं कुश व जल लेकर –

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरूषोत्तमाय इह पृथ्वियां जम्बूद्वीपे भारतखण्डे आर्यावृत्त अन्तगर्त हिमवत पर्वतदेशे ब्राह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवश्वत मनवन्तरे अष्टाविंशति तमे सत्य त्रेता द्वापर उपरान्ते कलयुगे कलयुगस्य प्रथम चरणे षष्टाब्दानां मध्ये .... नाम सम्वतसरे

सूर्य उत्तरायणे/दक्षिणायने .... ऋतौ .... मासे शुक्ल/कृष्ण पक्षे .... तिथौ अपना गोत्र गोत्रोत्पन्ने अपनी राशि राशौ अपना नाम शर्मा वर्मा, गुप्त या दास अहं ममोपात सकल दुरित क्षयाय देवर्षि मनुष्य यम पितृणां स्वपितृणां च अक्षय तृप्ति कामनाय गृहमध्ये तर्पणं करिष्ये। छोड़ दें।

यदि संस्कृत में न कर सकें तो हिन्दी में कर सकते हैं।

ऊँ सम्पूर्ण श्री से युक्त पुराणों में परमात्मा कहे जाने वाले विष्णु को नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है। इस पृथ्वी पर जम्बूद्वीप में आर्यावृत्त भारत के अन्तगर्त हिमवत पर्वत क्षेत्र में ब्राह्मा की सृष्टि के द्वितीय परार्द्ध में श्रीश्वेत वाराहकल्प के वैवश्वत मनवन्तर में अठ्ठाइस बार सतयुग त्रेता द्वापर के बाद कलयुग के प्रथम चरण में साठ सम्वतसरों में से .... नामक सम्वतसर पर उत्तरायण/दक्षिणायन सूर्य .... ऋतु मास शुक्ल/कृष्ण पक्ष की .... तिथि को अपना गोत्र गोत्र में उत्पन्न अपनी राशि राशि अपना नाम शर्मा/वर्मा, गुप्त या दास मैं सभी कष्ट और पापों को नष्ट करने के लिए देवर्षि मनुष्य यमादि पितृों व स्वपितृों की अक्षय तृप्ति की कामना के लिए अपने घर पर तर्पण कर रहा हूँ। **छोड़ दें।**

कुण्डी में चन्दन से त्रिभुज, चतुर्भज, षटभुज व वृत्त बना कर उसपर पुष्प रख अर्घपात्र रखें। अर्घपात्र में जल डाल कुशाओं से जल को अभिमन्त्रित करें –

ऊँ विश्वेदेवा सः आगत श्रुणताम इम गुं ह्वम् इदं बर्हि निषीदत। ऊँ विश्वेदेवा श्रुणतेम गुं ह्वम् मे ये अन्तरिक्षे ये उपद्यविष्ट ये अग्नि जिह्वाऽ उतवा यजत्राऽ आसद्या अस्मिन् वर्हिमादऽ यध्वं।

अर्घपात्र के जल में जौं डालते हुए ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन—

ॐ भूर्भवः स्वः ब्रह्मादयो देवा इह आगच्छन्तु इह तिष्ठन्तु गृह्णन्तु एतान् जलांजलीन्।

देवतीर्थ यानी हाथ सीधाकर कुश जौं ले जल छोड़ते हुए देवताओं का तर्पण—

ॐ ब्रह्मास् तृप्यताम्।
ॐ विष्णुस् तृप्यताम्।
ॐ रूद्रस् तृप्यताम्।
ॐ प्रजापतिस् तृप्यताम्।
ॐ देवास् तृप्यन्ताम्।
ॐ छन्दाः तृप्यन्ताम्।
ॐ वेदाः तृप्यन्ताम्।
ॐ ऋषयः तृप्यताम्।
ॐ पुराणाचार्यास् तृप्यन्ताम्।
ॐ गन्धर्वास् तृप्यन्ताम्।
ॐ इतर आचार्यास् तृप्यन्ताम्।
ॐ सम्वतसरः सावऽयवस् तृप्यताम्।
ॐ देवरूपस् तृप्यताम्।
ॐ अप्सरस् तृप्यताम्।
ॐ देवानुगास् तृप्यताम्।
ॐ नागास् तृप्यताम्।
ॐ सागरास् तृप्यताम्।
ॐ पर्वतास् तृप्यताम्।
ॐ सरितस् तृप्यताम्।
ॐ मनुष्यास् तृप्यताम्।
ॐ यक्षास् तृप्यताम्।
ॐ पिशाचास् तृप्यताम्।
ॐ सुपर्णास् तृप्यताम्।
ॐ भूतानिस् तृप्यताम्।
ॐ पशवस् तृप्यताम्।
ॐ वनस्पतयस् तृप्यताम्।
ॐ औषधयस् तृप्यताम्।
ॐ भूतग्रामः चतुर्विधस् तृप्यताम्।

जनेऊ को माला सी कर मुख उत्तर की ओर हो अर्घपात्र के जल में अक्षत डालते हुए सनकाादि मनुष्यों का आवाहन–

ॐ भूर्भवः स्वः सनकादि सप्त मनुष्याः इह आगच्छन्तु इह तिष्ठन्तु गृहन्तु एतान् जलांजलीन्।

प्रजापतितीर्थ यानी मुठ्ठी बांधकर कुश अक्षत ले जल छोड़ते हुए सनकादि मनुष्यों का दो–दो बार तर्पण–

ॐ सनकस् तृप्यताम्। ॐ सनन्दनस् तृप्यताम्।
ॐ सनातनस् तृप्यताम्। ॐ कपिलस् तृप्यताम्।
ॐ आसुरिस् तृप्यताम्। ॐ बौढुस् तृप्यताम्।
ॐ पंचशिखस् तृप्यताम्।

अपशव्य यानी जनेऊ दायें कन्धे से बायी ओर कर मुख दक्षिण की ओर हो, अर्घपात्र के जल में तिल डालते हुए कव्य वाडनल आदि पितरों का आवाहन–

ॐ भूर्भवः स्वः कव्य वाडनलादयो दिव्यपितरः इह आगच्छन्तु इह तिष्ठन्तु गृहन्तु एतान् जलांजलीन्।

पितृतीर्थ यानी मुठ्ठी बांध अगूंठा नीचे कर कुश तिल ले जल छोड़ते हुए कव्य वाडनल आदि पितरों का तीन–तीन बार तर्पण–

ॐ कव्य वाडनलस् तृप्यताम्। ॐ सोमस् तृप्यताम्।
ॐ यमस् तृप्यताम्। ॐ अर्यमास् तृप्यताम्।
ॐ अग्निष्वाताः पितरस् तृप्यताम्।
ॐ सोमपाः पितरस् तृप्यन्ताम्।
ॐ वर्हिषद पितरस् तृप्यन्ताम्।

इसी अवस्था में अर्घपात्र के जल में तिल डालते हुए 14 यमों का आवाहन–

ॐ भूर्भवः स्वः यमादि चतुर्दशः यमाः इह आगच्छन्तु इह तिष्ठन्तु गृहन्तु एतान् जलांजलीन्।

पितृतीर्थ यानी मुठ्ठी बांध अगूंठा नीचे कर कुश तिल ले जल छोड़ते हुए चौदह यमों का तीन–तीन बार तर्पण–

ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः।

ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अनन्तकाय नमः।

ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ कालाय नमः।

ॐ सर्व भूतक्षयाय नमः। ॐ औडुम्बराय नमः।

ॐ दध्यनाय नमः। ॐ नीलाय नमः।

ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः।

ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः।

पितृतीर्थ से कुश तिल ले लगातार जल छोड़ते तर्पण–

ॐ उदीरतामवर उत्परासः उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुय्यऽ इयुरवृकाऽ ऋतज्ञास्ते नोवन्तु पितरो हवेषु ।

ॐ अंगिरसो नः पितरो नवव्याऽ अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयं गुं सुमतौ यज्ञियानाऽ मपि भद्रे सौमनसे स्याम।

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासो ॐ अग्निष्वात्ताः पृथिभि दैवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रवन्तुऽ तेऽ वन्त्वस्मान्।

ॐ ऊर्ज वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालं परिश्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्न पितरो मीमदन्त पितरोऽ तीतृपन्त पितरः शुनधदध्वम्।

ॐ ये चेह पितरो ये च ने ह्यांश्च विद्यमां गुं उच न प्रविद्यम। त्वम् वेत्थयति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ गुं सुकृतन्जुषस्ध।

ॐ मधुव्वाताऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। मादध्वीर्नः सन्त्वोऽ षधीः।

ॐ मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवः गुं रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता।

ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः मधुमां अस्तु सूर्यः। मध्वीर्गावो भवन्तु नः।

ॐ मधु मधु मधु तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

अपशव्य/मुख दक्षिण/पितृतीर्थ/बायां घुटना पीछे की ओर हाथ में कुश तिल जल से क्रमशः पिता दादा परदादा माता दादी व परदादी का तर्पण

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो अस्मद् **पिता** .... शर्मा वसु स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्मै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो अस्मद् **पितामह** .... शर्मा रूद्र स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्मै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो अस्मद् **प्रपितामह** .... शर्मा आदित्य स्वरूपः तृप्यताम् इदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रा अस्मद् **माता** .... देव्या वसु स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्यै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रा अस्मद् **पितामही** .... देव्या रूद्र स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्यै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रा अस्मद् **प्रपितामही** .... देव्या आदित्य स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्यै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

यदि सौतेली माता की मृत्यु हो गयी है तो उनका भी तर्पण करें–

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रा अस्मद् **सपत्नमाता** .... देव्या वसु स्वरूपः तृप्यताम् इदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ऊँ नमो वः पितरो रसाय, नमो वः पितरः शोषाय, नमो वः पितरो जीवाय, नमो वः पितरः स्वधायै, नमो वः पितरो घोराय, नमो वः पितरो मन्यवे, नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त।

(ननिहाल पक्ष का तर्पण)

ऊँ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो अस्मद् **मातामह** .... शर्मा वसु स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्मै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ऊँ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो अस्मद् **प्रमातामह** .... शर्मा रूद्र स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्मै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ऊँ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो अस्मद् **वृद्ध प्रमातामह** .... शर्मा आदित्य स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्मै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ऊँ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने .... ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रा अस्मद् **मातामही** .... देव्या वसु स्वरूपः तृप्यताम् इदंजलं सतिलं तस्यै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने ....
ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो
अस्मद् **प्रमातामही** .... देव्या रूद्र स्वरूपः तृप्यताम्
इदंजलं सतिलं तस्यै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने ....
ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रा
अस्मद् **वृद्ध प्रमातामही** .... देव्या आदित्य स्वरूपः तृप्यताम्
इदंजलं सतिलं तस्यै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

(ससुराल पक्ष का तर्पण केवल श्वसुर का सपत्नीक)

ॐ अद्यैव .... नाम सम्वतसरे सूर्य .... आयने ....
ऋतौ .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... गोत्रो
अस्मद् **श्वसुरः** .... शर्मा सपत्नीकः वसु स्वरूपः तृप्यताम्
इदंजलं सतिलं तस्मै स्वधा नमः तृप्यध्वम् तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्।

यदि अन्य किसी की मृत्यु हो गयी है तो उनका भी तर्पण करें–

अस्मत्पत्नी (पत्नी), अस्मत्पुत्रः (पुत्र), अस्मत्कन्या (बेटी), अस्मद् पितृव्य सपत्नीक (चाचा–चाची), अस्मद् मातुलः सपत्नीक (मामा–मामी), अस्मद् भ्राताः सपत्नीक (भाई –भाभी), अस्मद् सपत्न भ्राताः (सौतेला भाई), अस्मद् पितृभगिनी सभतृका (बुआ फूफा), अस्मद् मातृभगिनी सभतृका (मौसी मौसा), अस्मद् भगिनी सभतृका (बहिन जीजा) आदि।

ॐ ज्येष्ठास् तष्यन्ताम्
ॐ कनिष्ठास् तृप्यन्ताम

ॐ गुरुवः तृप्यन्ताम
ॐ शिष्याः तृप्यन्ताम

ॐ बान्धवाः तृप्यन्ताम
ॐ ऋत्विजः तृप्यन्ताम

इसके बाद उसी संकल्प और उसी अवस्था में लगातार जल धारा देते रहें–

ॐ आब्रह्म स्तम्व पर्यन्त देवर्षि पितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमाता महादयः।।

अतीव कुल कोटिनां सप्तद्वीप निवासिनां। आब्रह्म भुवनाल्लोकान् निदमस्तु तिलोदकम्।।

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशीवनामादीया कुलद्वये। ये ममसंगतांऽ च भृत्या तथैव आश्रिता। सेवकान् च कृतोपकारा जन्मान्तरे ये ममसंगतांऽ च तेभ्यः मिमन्द दामि।।

देवासुराः तथा नागाः यक्षाः गन्धर्व किन्नराः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कुष्मांडा स्तवरः तथा।।

जलेचराः भूमिचराः वाय्याचरान् च जन्तवः तृप्तिमेते नयांत्वाशुं दीयते सलिलमया।।

यत्र क्वचना सस्थाना क्षुट तुषोपहता आत्मानाम् इदम् क्षय्य मेवास्तु मयादत्त तिलोदकम्।।

पितृवंशे मृताः ये च मातृवंशे च ये मृताः। गुरू श्वसुन बन्धुनां ये च अन्ये बांधवाः मृताः।।

ये अकुले लुप्त पिंडाः पुत्रदारा विवर्जिताः। क्रियालोप गता ये च जात्यन्धाः पंगवः तथा।

विरूपाऽ आमगर्भाँच ज्ञाताज्ञाताः कुलेमम। तेषां आप्यायऽ नायते यनिनंमया।

ये बान्धवा बान्धवा ये अन्य जन्मनि बान्धवाः। ते सर्वे तृप्तिम् आयान्तु मया दत्तेन वारिणा।

धोती या अंगोछे के एक कोने को तर्पित जल में भिगो कर निचोडते हुए पढ़ें–

ये के च अस्मत् कुलेजाताः अपुत्राः गोत्रिणो मृताः। ते गृहन्तु मया दत्तं वस्त्रं निष्पीडित् ओदकं।।

भूमि पर बांये भाग में वस्त्र निचोड़ दें।

कुश त्याग दें सव्य होकर आचमन करें। कुण्डी में चन्दन से पदमाकार(गोला) बनाकर उस पर मंत्र पढ़ते हुए चन्दन अक्षत फूल व जौं से पूजन करें तथा अर्घ्य से जल दें–

मंत्र– ॐ ब्रह्माय ज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरूचोव्वेन आवः सबुध्न्याऽ उपमा अस्य व्विष्ठाः सतश्त योनि मसतश्च विवः।

अर्घ्य– ॐ ब्रह्मणे नमः ।।

मंत्र– ॐ इदं विष्णुः विचक्रमे त्रेधानि दधेपदम समूढम ऽस्यापा गुं सुरे।

अर्घ्य– ॐ विष्णवे नमः।

मंत्र– ॐ नमस्ते रूद्र मन्यवंऽ उतोतऽ इषवे नमः। बाहुभ्यांम् उतते नमः।

अर्घ्य– ॐ रूद्राय नमः।

मंत्र– ऊँ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् नमृतं मृत्यञ्च। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन।

अर्घ्य– ऊँ सूर्याय नमः।।

मंत्र– ऊँ मित्रस्य चर्षणी धृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्राश्रवः तमम्।।

अर्घ्य– ऊँ मित्राय नमः।।

मंत्र– ऊँ इमं मे वरूण श्रुधी ह्वमद्या च मृडय। त्वामवस्युऽ राचके।

अर्घ्य– ऊँ वरूणाय नमः।

दोनो हाथ ऊपर कर मंत्र– ऊँ अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनां गुं अनु भ्राजन्तो अग्नयो यथा। उपयाम गृहीतोसि सूर्याय त्वा भ्राजायैऽ षते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठः त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽ हमनुष्येषु भूयासम्। ऊँ हं गुं सः शुचिऽ सद्व सुरन्तरिक्ष सद्वोता व्वेदिषदऽ तिथिः दुरोणसतै् नृषदर सदृसद् व्योम सदब्जा गोजाऽ ऋतजाऽ अदृजाऽ ऋतुं बृहत्।

पूर्व से प्रारम्भ कर दसों दिशाओं को नमस्कार करें।

ऊँ प्राच्यै इन्द्राय नमः।
ऊँ आग्नेयै अग्नये नमः।
ऊँ दक्षिणायै यमाय नमः।
ऊँ नैत्रृत्यै निर्ऋतये नमः।
ऊँ पश्चिमायै वरूणाय नमः।
ऊँ वायव्यै वायवे नमः।
ऊँ उदीच्यै सोमाय नमः।
ऊँ ऐशान्यै ईशानाय नमः।
ऊँ ऊध्वायै ब्रह्मणे नमः।
ऊँ अधस्तात् अनन्ताय नमः।

पुनः देवतीर्थ से जल कुश से तर्पण करें।

ॐ प्राच्यै ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः।

ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ औषधिभ्यो नमः।

ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ महद्भ्यो नमः।

ॐ अदभ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये वरूणाय नमः।

तर्पण किये जल से मुख नेत्रादि को स्पर्श करें।

ॐ सं वर्चसा पयसा सन्तनूभिर गन्महि मनसास गुं शिवेन त्वष्ठा सुदत्रो व्विदधातु रायोऽनु मार्ष्टु तन्वो यद्विऽलिष्टम्।

विसर्जन

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसः पत इमं देवं यज्ञं स्वाहा वातेधाः। **दोनों हाथ उठा कर** – अनेन यथाशक्ति देवर्षि मनुष्य यम पितृतर्पणाख्येन कर्मणा श्री भगवन् मम समस्त पितृरूपी जनार्दन वासुदेवः प्रीयतां न मम।

आचमन करें ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा, ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा, ॐ सामवेदाय स्वाहा, ॐ अथर्ववेदाय नमः।

हाथ जोड़ कर ॐ यस्यः मृत्या च नामोक्तया तपोयज्ञ क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योऽ वन्देतं अच्युतं।

ॐ अच्युताय नमः ॐ अच्युताय नमः ॐ अच्युताय नमः।।